4. पर्ण शीर्णता

रोगजनक: <u>एल्टरनेरिया</u> <u>एल्टरनेटा</u> और <u>फुसैरियम</u> स्पीशीज़।

लक्षण

- ए. एल्टरनेट संक्रमण में, प्रारंभ में पत्तियों के किनारे सूखने लगती है और बाद में पूरी पत्ती एवं पर्णवृन्त सूख जाते हैं ।

- फुसैरियम स्पी.में पत्तियों के किनारे भूरे और काले बन जाते है जो बाद में मध्य शिरा की ओर फैल जाता है जिसके कारण पत्तियां झड़ जाती हैं।

रोग फैलाने वाले घटक

- अल्टरनेटा, संक्रमित पत्तियों में निष्क्रिय अवस्था में रहता है । ये मिट्टी में पौधों के मलबे पर जीवित रहते है और स्थिति अनुकूल होने पर नई फसल को संक्रमित कर सकता है।
- 28-30°C का तापमान कवक के गुणन के लिए अनुकूल होता है।

फसल नष्ट : 10-12%

आपतन

गर्मी और वर्षा के मौसम में इसका प्रकोप होता है

प्रबंधन

0.1% हेक्साकोनाजोल 5% एससी (1 मिली/ली) का छिड़काव करें। रोग की स्थिति गंभीर होने पर 10-15 दिनों के अंतराल पर दो छिड़काव करें।

सुरक्षित अवधि: पांच दिन।

अरुणकुमार.जी.एस, सहना, निसर्गा.एन.आर,
भव्या.एम.आर, सौभाग्या.पी, महिबा हेलन.एस,
रघुनाथ. एम.के. और गांधी दास. एस

5. जीवाणु पर्णशीर्णता

रोगज़नक़: <u>स्यूडोमोनास</u> <u>सिरिंज</u> पी.वी. मोरी / <u>ज़ैंथोमोनस</u> <u>कैम्पैस्ट्रिस</u> पीवी मोरी ।

लक्षण

- प्रारंभ में, यह पत्तियों की निचली सतह पर पानी से सने, अनियमित भूरे छोटे धब्बों के रूप में प्रकट होता है जो बाद में पत्तियों की ऊपरी सतह और टहनियों के अग्र भागों पर दिखाई देता है।
- गंभीर स्थिति में, शिराएँ एवं लघु शिराएँ नेक्रोटिक(ऊतकक्षयी और मुड़ी हुई, सड़ी हुई और भूरे-काले रंग की हो जाती हैं।

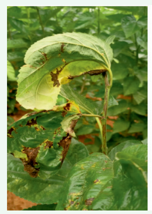

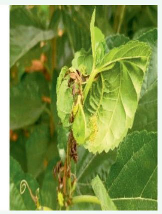

रोग फैलाने वाले घटक

- संक्रमण का प्राथमिक स्रोत मिट्टी है । सिंचाई एवं कृषि प्रणाली दूसरा संक्रमण स्रोत है ।
- रोगज़नक़ रंध्रों, हवा, बारिश और कीड़ों के हमले से होने वाले घावों के माध्यम से प्रवेश करते हैं

आपतन

वर्षा एवं शीत ऋतु में रोग प्रकोप होता है

प्रबंधन

250 पीपीएम स्ट्रेप्टोमाइसिन (1 ग्राम/4 ली.) या 0.2% मैंकोजेब 75 डब्ल्यूपी (2 ग्राम/ली.) का छिड़काव करें, यदि रोग गंभीर हो तो एक सप्ताह के बाद दोबारा छिड़काव करें।

सुरक्षित अवधि : 10 दिन

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें
केंद्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
केंद्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय
भारत सरकार, श्रीरामपुरा, मैसूर 570 008
दूरभाष 0821-2362757,2362406
फैक्स : 0821-2362845
www.csrtimys.res.in csrtimys@gmail.com
csrtimys csrtimys csrtimysore

शहतूत के पर्णीय रोगों का प्रबंधन

केंद्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
केंद्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय
भारत सरकार, श्रीरामपुरा, मैसूर 570 008

Copies: 1000 July 2023 Design & Layout: J. Justin Kumar

1. पर्ण चित्ती

रोगजनक:

सर्कोस्पोरा मोरिकोला, सेटोस्फ़ेरिया रोस्ट्रेटा, निग्रोस्पोरा स्पैरिका, कर्वुलरिया लुनाटा और क्लैडोस्पोरियम क्लैडो-स्पोरियोइड्स।

लक्षण

रोग संक्रमण के प्रारंभिक लक्षण के रूप में छोटे धूसर (राख) या भूरे रंग के, गोलाकार या अनियमित धब्बे, ऊपरी सतह पर छोटे नेक्रोटिक(ऊतकक्षयी) धब्बे, भूरे रंग के वृत्ताकार या अनियमित धब्बे प्रकट होते हैं और अधिक संक्रमण होने की स्थिति में ये बड़े होकर आपस में जुड़ जाते हैं और छिद्र बन जाते हैं। गंभीर रूप से प्रभावित पत्तियाँ पीली पड़ जाती हैं और समय से पूर्व झड जाती हैं।

सर्कोस्पोरा

सेटोस्फ़ेरिया

निग्रोस्पोरा स्पैरिका पर्ण चित्ती

रोग फैलाने वाले घटक

- वायु जनित कोनिडिया हवा और बारिश की बूंदों से फैलता है।
- 24-26°C का तापमान और 70-80% आरएच रोग के विकास के लिए अनुकूल हैं।

फसल नष्ट : 10-12%

आपतन: वर्षा एवं शीत ऋतु में अधिक प्रकोप होता है । छंटाई के 35-40 दिन बाद रोग की तीव्रता बढती है और छंटाई के 70 दिन बाद गंभीर हो जाता है।

प्रबंधन

0.1% हेक्साकोनाजोल 5% एससी (1 मिली/ली) का छिड़काव करें। रोग की स्थिति गंभीर होने पर 10-15 दिनों के अंतराल पर दो छिड़काव करें। **सुरक्षित अवधि:** पांच दिन।

2. चूर्णिल आसिता (पाउडरी मिल्ड्यू)

रोगजनक : फाइलेक्टिनिया कोरिलिया

लक्षण

प्रारंभ में, पत्तियों की निचली सतह पर चूर्णिल धब्बे दिखाई देते हैं जो बाद में पूरी पत्ती की सतह को ढक लेते हैं और पत्तियों की ऊपरी सतह पर इन धब्बों के अनुरूपी स्थान हरिमाहीन हो जाते हैं। संक्रमित पत्तियाँ पीली होकर झड़ जाती हैं।

रोग फैलाने वाले घटक

- वायु जनित कोनिडिया हवा से फैलता है।
- 24-28°C तापमान और 75-80% आरएच में तीव्र संक्रमण होता है और तेजी से रोग बढता है।

फसल नष्ट: 5-10%

आपतन: शीत एवं वर्षा ऋतु में रोग प्रकोप होता है और छंटाई के 40 वें दिन में बढ़ता है और 70 वें दिन पर गंभीर हो जाता है।

प्रबंधन

- पौधों के बीच पर्याप्त दूरी रखें ।
- 0.1% हेक्साकोनाजोल 5% एससी (1 मिली/ली) या 0.2% गीला करने योग्य सल्फर 80% डब्ल्यूपी (2 ग्रा/ली) का छिड़काव करें। **सुरक्षित अवधि:** पांच दिन
- पीले लेडी बर्ड भ्रमर या चित्तीदार लेडी बर्ड भ्रमरों को मुक्त करें जो मिल्ड्यू फफूद को आहार बनाता है।
- एमआर 1 और एमआर 2 जैसी प्रतिरोधी उपजातियां उगाएं |

3. पर्ण किट्ट

रोगज़नक़: सेरोटेलियम फिसी

लक्षण

प्रारंभ में, पत्तियों की निचली सतह पर आलपिन आकार के गोलाकार भूरे रंग के फूटने वाले विक्षतें दिखाई देते हैं और बाद में पत्तियां पीली होकर मुरझा जाती हैं।

रोग फैलाने वाले घटक

- वायु जनित यूरिडोस्पोर पानी की बूंदों या हवा के प्रवाह से फैलता है ।
- 22-26°C का तापमान और 70% से ऊपर की आपेक्षिक आर्द्रता रोग संक्रमण और विकास को तेज करता है।

फसल नष्ट : 10-15%

आपतन

वर्षा एवं शीत ऋतु में अधिक प्रकोप होता है । छंटाई (डीएपी) के 45-50 दिन बाद रोग की तीव्रता बढती है और 70 दिन बाद अति तीव्र हो जाता है । परिपक्व पत्तियां रोग से अधिक प्रभावित होती है ।

प्रबंधन

- पौधों के बीच पर्याप्त दूरी रखें ।
- फसल काटने में देरी न करें और बची हुई पत्तियां बागान में न छोडें ।
- 0.1% हेक्साकोनाजोल [illegible]% एससी (1 मिली/ली) का पर्णीय छिड़काव करें। तीव्र प्रकोप की स्थिति में 10-15 बाद इसकी आवृत्ति करें ।
- **सुरक्षित अवधि:** पांच दिन।